REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

क्रिप्टोकरेंसी : लाभ, हानियाँ एवं भारत में इसकी स्थिति

मोनिका कटारिया
सहायक आचार्य एबीएसटी , डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राज.)

ABSTRACT

वर्तमान युग तकनीक व नवाचार का युग है। विश्व में आज प्रत्येक क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन हो रहे हैं। तकनीकी विकास के कारण प्रत्येक क्षेत्र डिजीटल होता जा रहा है। ऐसा ही एक नवाचार क्रिप्टोकरेंसी के रूप में मुद्रा के क्षेत्र में भी हुआ है। क्रिप्टोकरेंसी अर्थात् आभासी डिजीटल मुद्रा। गत कुछ वर्षों में बिटकॉइन सरीखी क्रिप्टोकरेंसीज अपनी अद्वितीय विशेषताओं व मूल्यों में उतार–चढ़ावों के कारण सुर्खियों में रहीं। परन्तु अभी भी जन–सामान्य में क्रिप्टोकरेंसी के अर्थ व इसकी कार्यप्रणाली को लेकर असमंजस की स्थिति है। इस शोध पत्र का उद्देश्य क्रिप्टोकरेंसी के अर्थ व कार्यप्रणाली के बारे में आधारभूत जानकारी प्रदान करना है। साथ ही इस पत्र का उद्देश्य इसके लाभ–हानियों, विश्व में प्रचलित मुख्य क्रिप्टोकरेंसीज एवं भारत में इसकी स्थिति का अध्ययन करना भी है।

KEYWORDS - डिजीटल, मुद्रा, क्रिप्टोकरेंसी, बिटकॉइन.

प्रस्तावना :

विश्व में प्रत्येक व्यक्ति, संस्था एवं राष्ट्र को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने तथा परस्पर लेनदेन को सुगम व सरल बनाने के लिए किसी न किसी रूप में मुद्रा की आवश्यकता होती है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक राष्ट्र की अपनी अलग–अलग मुद्रा होती है। उदाहरणार्थ भारत में रूपया, अमेरिका में डॉलर, फ्रांस में यूरोपियन यूरो, कुवैत में कुवैती दीनार, स्विट्जरलैंड में स्विस फ्रैंक, सउदी अरब में रियाल आदि। ये सभी प्रचलित मुद्राएं भौतिक अर्थात् मुद्रित रूप में उपलब्ध होती हैं जिन्हें हम देख सकते हैं, स्पर्श कर सकते हैं, जेब में रख सकते हैं तथा सम्बन्धित देश के नियमानुसार उस देश में इनका प्रयोग कर सकते हैं। विश्व के समस्त राष्ट्रों में लेनदेन सामान्यतः वहाँ की प्रचलित मुद्रा में ही किये जाते हैं। इन समस्त मुद्राओं का संचालन व नियमन सम्बन्धित राष्ट्र की सरकार द्वारा निर्धारित नियामक संस्था द्वारा किया जाता है। परन्तु गत कुछ वर्षों से एक नवीन प्रकार की मुद्रा का चलन प्रारम्भ हआ है जो कि इस सामान्य मुद्रा से बिल्कुल भिन्न है। यह मुद्रा है 'क्रिप्टोकरेंसी'। वर्ष 2017 में अपने मूल्यों में चमत्कारिक वृद्धि एवं वर्ष 2018 में अप्रत्याशित कमी के कारण 'क्रिप्टोकरेंसी' वर्ष 2017 व 2018 में गूगल पर सर्वाधिक खोजे गए विषयों में से एक रही। इसके बावजूद जन–सामान्य को इसके बारे में अधिक व पूर्ण जानकारी नहीं है। 'क्रिप्टोकरेंसी' एक डिजीटल मुद्रा है, जिसे न तो देख सकते हैं, न छू सकते हैं व न ही सामान्य मुद्रा की भांति जेब में रख सकते हैं क्योंकि यह मुद्रित रूप में उपलब्ध नहीं होती है। इसका भौतिक रूप से कोई स्वरूप न होने के कारण इसे आभासी मुद्रा भी कहा जाता है। यह एक ऐसी मुद्रा है जिसे कम्प्यूटर एल्गोरिथ्म के आधार पर बनाया गया है। इसे केवल कम्प्यूटर पर ही

देखा जा सकता है, गिना जा सकता है एवं भुगतान किया जा सकता है। यह एक स्वतंत्र मुद्रा है जिसका संचालन व नियमन किसी संस्था या किसी सरकार द्वारा नहीं किया जाता है। दूसरे शब्दों में इसे विकेन्द्रित मुद्रा कहा जा सकता है। इनका कारोबार करने वाले व्यापारियों के माध्यम से इन्हें विश्व की अन्य मुद्राओं में भी परिवर्तित किया जा सकता है। अनेक देशों में इसके कारोबारियों ने अपने संघ स्थापित कर एक्सचेंज खोले हुए है, जहाँ इनके सौदे किए जाते है। 'क्रिप्टोकरेंसी' का प्रयोग ऑनलाईन खरीदारी या परस्पर लेनदेन के लिए किया जाता है। इसके लिए ब्लॉकचेन तकनीक का प्रयोग किया जाता है। जिस प्रकार ई–मेल करने के लिए इंटरनेट की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार 'क्रिप्टोकरेंसी' के लिए ब्लॉकचेन की आवश्यकता होती है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. क्रिप्टोकरेंसी एवं क्रिप्टोग्राफी के संबंध में आधारभूत जानकारी प्राप्त करना।
2. बिटकॉइन व विश्व में प्रचलित अन्य मुख्य क्रिप्टोकरेंसीज की जानकारी प्राप्त करना।
3. क्रिप्टोकरेंसी के लाभ व हानियों का अध्ययन करना।
4. भारत में क्रिप्टोकरेंसी की स्थिति एवं भविष्य का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति –

प्रस्तुत शोधपत्र विभिन्न वेबसाईट्स (सरकारी व निजी) एवं समाचार पत्रों से लिए गए द्वितीयक समंकों पर आधारित है।

क्रिप्टोग्राफी –

क्रिप्टोकरेंसी के उपयोग एवं भुगतान के लिए क्रिप्टोग्राफी का उपयोग किया जाता है। क्रिप्टोग्राफी, स्टेनोग्राफी की भांति एक कूट एवं सांकेतिक लेखन है, जिसमें भेजे गए संदेश एवं जानकारी को सांकेतिक शब्दों में बदला जाता है, जिससे कि उसे भेजने वाला या प्राप्त करने वाला ही उसे खोल पाऐ या पढ़ पाऐ। यह ठीक शॉर्टहैंड की भांति होता है। शॉर्टहैंड में शब्दों को नियमानुसार संकेतों में परिवर्तित किया जाता है, जिससे उसे केवल वही पढ़ सकता है जो कि शॉर्टहैंड की जानकारी रखता है। ठीक इसी प्रकार क्रिप्टोग्राफी द्वारा क्रिप्टोकरेंसी के भुगतान को कूट लेखन द्वारा सुरक्षित किया जाता है।

क्रिप्टोकरेंसी का प्रादुर्भाव –

क्रिप्टोकरेंसी का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। क्रिप्टोकरेंसी की शुरूआत सर्वप्रथम वर्ष 2009 में हुई थी। 'बिटकॉइन' नामक क्रिप्टोकरेंसी विश्व की प्रथम क्रिप्टोकरेंसी है। बिटकॉइन विश्व का प्रथम पूर्णतया खुला भुगतान तंत्र है। प्रथम क्रिप्टोकरेंसी होने के साथ ही यह सर्वाधिक प्रचलित क्रिप्टोकरेंसी भी है। अत्यधिक प्रचलन के कारण काफी समय तक बिटकॉइन को क्रिप्टोकरेंसी के पर्याय के रूप में ही समझा जाता था। इसे जापान के 'सातोषी नाकमोतो' नामक इंजीनियर ने बनाया था। यह 3 जनवरी, 2009 को अस्तित्व में आई। बिटकॉइन के प्रचलन के बाद अनेक अन्य क्रिप्टोकरेंसी बाजार में आई। वर्ष 2009 से लेकर वर्तमान समय तक एक हजार से अधिक प्रकार की क्रिप्टोकरेंसीज बाजार में आ चुकी हैं।

बिटकॉइन की कार्यप्रणाली एवं इसमें उतार–चढ़ाव –

बिटकॉइन विश्व की पहली ग्लोबल विकेन्द्रित करेंसी है, जो कि डिजीटल दुनिया के लिए बनाई गई है। इसमें कोई क्रेडिट लिमिट नहीं होती है। बिटकॉइन पीयर टू पीयर नेटवर्क पर आधारित क्रिप्टोकरेंसी है। इसकी सहायता से बिना थर्ड पार्टी एवं बैंक की सहायता के व्यवहार किया जा सकता है। आम डेबिट/क्रेडिट कार्ड की तुलना में इसके लेनदेन पर शुल्क काफी कम होता है। साथ ही इस करेंसी का विनियमन करने के लिए कोई नियामक संस्था नहीं है। बिटकॉइन को सिर्फ इलेक्ट्रॉनिक रूप में स्टोर किया जा सकता है। इसे स्टोर करने के लिए बिटकॉइन वॉलेट की आवश्यकता होती है। यह एक तरह का सॉफ्टवेयर प्रोग्राम होता है, जिसके अंदर बिटकॉइन स्टोर करके रखे जाते है। किसी बिटकॉइन का अपना प्राइवेट नंबर या कोड होता है जो कि बिटकॉइन वॉलेट में सुरक्षित रखा जाता है इसकी सहायता से बिटकॉइन लिए जा सकते है अथवा किसी को

दिए जा सकते हैं। बिटकॉइन का आदान–प्रदान पी टू पी तकनीक से होता है अर्थात् ये सीधे एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर तक पहुँच जाते हैं। यह सामान्य लोगों में बंटे ब्लॉकचेन के रूप में भेजा जाता है। जैसे बैंक हमारे पैसों का हिसाब किताब रखते हैं वैसे ही ब्लॉकचेन में हर बिटकॉइन का हिसाब किताब रखा जाता है। व्यवहारकर्ता की पहचान का खुलासा किए बिना विश्व में कहीं भी किसी भी स्थान पर हुए व्यवहार का हिसाब इस ब्लॉकचेन में होता है। इसमें हर व्यवहार को वेरिफाई किया जाता है तथा नेटवर्क इसका रिकॉर्ड रखता है। इस तकनीक को वे अनेक लोग सक्षम बनाते हैं जो शक्तिशाली कम्प्यूटरों की मदद से व्यवहारों पर नजर रखते हैं व इसकी जाँच करते हैं। यह कार्य जो सफलतापूर्वक सम्पन्न कर लेता है उसे ईनाम स्वरूप कुछ बिटकॉइन दिए जाते हैं। इसे बिटकॉइन माइनिंग कहा जाता है। कूट भाषा में होने वाले इन व्यवहारों को वेरिफाई करने वाले व्यक्ति क्लर्क की भांति कार्य करते हैं, इन्हें माइनर्स कहा जाता है।

अपनी शुरूआत के समय बिटकॉइन अधिक प्रचलित नहीं था। उस समय इसका मूल्य 1 सेंट के बराबर था। दिसम्बर, 2010 में बिटकॉइन का मूल्य 22 सेंट पर पहुँच गया। 2014 में एक बिटकॉइन का मूल्य 1 हजार डॉलर हो गया। इसके आगामी कुछ वर्षों में इसके मूल्यों में चमत्कारिक वृद्धि हुई। 29 नवम्बर, 2017 को इसका मूल्य लगभग 11 हजार डॉलर हो गया, इसी प्रकार वृद्धि करते हुए 15 दिसम्बर को 17900 डॉलर व 17 दिसम्बर को 19783 डॉलर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। परन्तु इसके बाद चीन, भारत, दक्षिणी कोरिया सहित अन्य देशों के नियामक व प्रतिबन्धात्मक रवैये, भारत में बिटकॉइन खरीदने के लिए बैंक खातों डेबिट/क्रेडिट कार्डस् के उपयोग पर रोक, हैकिंग, बिटकॉइन चोरी एवं सुरक्षा सम्बन्धी जोखिमों के कारण बिटकॉइन के मूल्यों में अप्रत्याशित कमी होनी शुरू हो गई। जनवरी, 2018 से फरवरी, 2018 के बीच बिटकॉइन के मूल्यों में लगभग 65 प्रतिशत की भारी गिरावट हुई। चीन द्वारा 1 फरवरी, 2018 को पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किए जाने के बाद 5 फरवरी को इसका मूल्य घटकर 6914 डॉलर हो गया। इसी प्रकार लगातार घटते हुए 5 जुलाई, 2018 को 6343 व 14 नवम्बर, 2018 को 5590 डॉलर, 1 जनवरी 2019 को 3747 डॉलर हो गया।

अन्य क्रिप्टोकरेंसीज –

बिटकॉइन के अतिरिक्त विश्व में अनेक क्रिप्टोकरेंसीज प्रचलित हैं। उनमें से कुछ मुख्य निम्नानुसार हैं –

1. **लाइटकॉइन** – लाइटकॉइन की शुरूआत 2011 में पूर्व गूगल कर्मचारी चार्ली ली द्वारा की गई थी। यह एक विकेन्द्रित पीयर टू पीयर क्रिप्टोकरेंसी है। इसकी बहुत सारी विशेषताएँ बिटकॉइन से मिलती–जुलती है। परन्तु इसमें ब्लॉक जेनरेट करने का कार्य बिटकॉइन से 4 गुणा कम समय में हो जाता है, जिससे इसमें व्यवहार शीघ्र पूर्ण हो जाता है।
2. **रिप्पल** – यह भी एक प्रसिद्ध क्रिप्टोकरेंसी है। इसे जुलाई, 2012 में शुरू किया गया था। क्रिस लासेन एंड जैड मैकालेन ने इसे शुरू किया था। यह डिस्ट्रीब्यूटेड ओपन सोर्स प्रोटोकोल पर आधारित करेंसी है।
3. **मोनेरो** – इसे अप्रैल, 2014 में शुरू किया गया था। इसकी शुरूआत निकोलस ब्रैन व साबर हेगने द्वारा की गई। यह भी एक ओपन सोर्स क्रिप्टोकरेंसी है जो कि गोपनीयता एवं विकेन्द्रीकरण पर आधारित है। रिंग सिग्नेचर नामक एक खास तकनीक के जरिये इसमें लेनदेन को सुरक्षित व गोपनीय बनाने का दावा किया जाता है। इसका उपयोग अधिकांशतः डार्क वेब और ब्लॉक मार्केट में होता है। इसका उपयोग ज्यादातर स्मगलिंग एवं कालाबाजारी में किया जाता है।
4. **ईथरम** – ईथरम को 19 वर्षीय रूसी प्रोग्रामर विटालिक बटरिन ने वर्ष 2015 में लॉंच किया था। यह भी बिटकॉइन की भांति ओपन सोर्स तकनीक पर कार्य करता है। यह एक ब्लॉकचेन कम्प्यूटिंग तकनीक है जिसकी मदद से डिजीटल टोकन बनाए जाते हैं। यह बिटकॉइन से काफी तेज है।
5. **डैश** – डैश क्रिप्टोकरेंसी का आविष्कार वर्ष 2014 में हुआ था। शुरू में इसे डार्क कॉइन के नाम से जाना जाता था। यह 'मास्टरनोड' नामक नेटवर्क की सहायता से कार्य करता है।

इसके अलावा जैडकैश, फैक्टम, बिटकॉइन कैश, स्टेलर, ट्रोन, विनेन्स कॉइन, कार्डनो, निओ, नैम आदि क्रिप्टोकरेंसी भी बाजार में प्रचलित है।

क्रिप्टोकरेंसी के लाभ –

जिस प्रकार किसी भी वस्तु के लाभ व हानियाँ दोनों ही होती हैं उसी प्रकार क्रिप्टोकरेंसी के भी लाभ व हानियाँ दोनों ही हैं। इसके लाभ निम्नलिखित है –

1. यह एक डिजीटल करेंसी है, जिसमें धोखाधड़ी की उम्मीद कम होती है।
2. बाजार में कीमतों के उतार–चढ़ाव का फायदा उठाने के लिए इनमें निवेश किया जा सकता है।
3. अधिकांश क्रिप्टोकरेंसीज के वॉलेट उपलब्ध हैं जिसके कारण ऑनलाइन खरीदारी एवं लेन देन आसानी से हो जाता है।
4. इस प्रकार की मुद्राओं का कोई संस्था या सरकार नियमन नहीं करती। इस कारण से नोटबंदी जैसा खतरा नहीं रहता।
5. क्रिप्टोकरेंसी का सबसे बड़ा फायदा उन लोगों को होता है जो कि अपना धन छुपाकर रखना चाहते हैं इसलिए धन छुपाकर रखने वालों के लिए यह एक अच्छा अवसर बनकर उभरा है।
6. क्रिप्टोकरेंसी में निवेश व व्यवहार करने के लिए किसी तीसरे पक्षकार की आवश्यकता नहीं होती है।
7. क्रेडिट कार्ड की तुलना में क्रिप्टोकरेंसी ट्रांसफर करने के चार्ज भी बहुत कम लगते हैं अर्थात तुलनात्मक रूप से ट्रांजेक्शन फीस काफी कम होती है।
8. सामान्यतः क्रिप्टोकरेंसी विशेष प्रकार की सुरक्षा तकनीकों पर आधारित होती है। अतः इसमें डिजीटल भुगतान सुरक्षित होता है।

हानियाँ –

1. क्रिप्टोकरेंसी का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि इसमें जोखिम की मात्रा बहुत अधिक है। इसका नियमन करने के लिए कोई संस्था नहीं है इसका कारण कीमतों में उच्च अस्थिरता विद्यमान होती है। अतः इनमें निवेश अत्यंत जोखिमपूर्ण है।
2. क्रिप्टोकरेंसी का एक बड़ा नुकसान यह भी है कि अगर कोई व्यवहार गलती से हो गया हो तो उस भुगतान को रिवर्स नहीं कर सकते है। परिणामस्वरूप व्यक्ति को नुकसान भुगतना पड़ता है।
3. इस प्रकार की करेंसी का कोई भौतिक अस्तित्व नहीं होता न ही इसे मुद्रित किया जा सकता है एवं न ही इसके लिए कोई पास बुक ही जारी की जा सकती है।
4. इसका उपयोग दो व्यक्तियों के बीच होने के कारण इसका प्रयोग अपराध जगत, में ड्रग्स सप्लाई, हथियार खरीदने आदि के लिए भी हो सकता है। इसका इस्तेमाल आतंकी गतिविधियों में होने की भी आशंका रहती है।
5. क्रिप्टोकरेंसी को सहेजने के लिए बनाए गए इलेक्ट्रॉनिक वॉलेट्स के साथ सुरक्षा सम्बन्धी खतरे यथा हैकिंग, पासवर्ड चोरी आदि मौजूद हैं।
6. क्रिप्टोकरेंसी से गैर कानूनी लेनदेन को प्रोत्साहन मिलता है।
7. क्रिप्टोकरेंसी पीयर टू पीयर नेटवर्क पर आधारित होने के कारण कालाधन जमा करने का अवसर उपलब्ध करवाती है जिससे मनी लॉण्ड्रिंग का खतरा भी बढ़ता है।
8. क्रिप्टोकरेंसी एक नई प्रकार की करेंसी है जिसके बारे में समुचित जानकारी के अभाव में निवेशकों को धोखाधड़ी, उतार–चढ़ाव संबंधी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है।
9. क्रिप्टोकरेंसी सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं है।

भारत में क्रिप्टोकरेंसी –

विकेन्द्रित मुद्रा होने के कारण क्रिप्टोकरेंसी में उच्च स्तर की अनिश्चितता एवं जोखिम है। निवेशकों के हितों की रक्षा के मद्देनजर भारत में क्रिप्टोकरेंसी के सम्बन्ध में सरकार का रवैया प्रतिबन्धात्मक एवं इसे हतोत्साहित करने का ही रहा है। अपने ग्राहकों के हितों की रक्षा के संदर्भ में आर.बी.आई. ने पहली बार 24 दिसम्बर, 2013 को सामान्य जनता के लिये चेतावनी जारी की थी। तत्पश्चात् 1 फरवरी, 2017 को आर.बी.आई. ने पुनः इस संबंध में जनता को आगाह किया। 5 दिसम्बर, 2017 से निवेशकों के बढ़ते पागलपन को देखते हुए आर.बी.आई. ने एक बार फिर से बिटकॉइन सरीखी आभासी मुद्रा के खतरों से आगाह करने के लिए चेतावनी

जारी की। आर.बी.आई. के महाप्रबन्धक जोसा जे. कट्टर ने प्रैस प्रकाशनी के माध्यम से इस बारे में पूर्व में जारी की गई चेतावनी का उल्लेख करते हुए कहा कि बिटकॉइन जैसी क्रिप्टोकरेंसीज का किसी भी मौद्रिक प्राधिकरण द्वारा नियमन नहीं होता है, न ही इसका कोई कानूनी आधार है। इनके मूल्यों में भारी उतार–चढ़ाव के कारण इनके निवेश में नुकसान की भारी संभावना है। आर.बी.आई. ने इस चेतावनी में कहा कि क्रिप्टोकरेंसी के संचालन में आर्थिक, वित्तीय, परिचालनात्मक, कानूनी, ग्राहक संरक्षण और सुरक्षा संबंधी जोखिमें मौजूद हैं तथा यह भी स्पष्ट किया कि रिजर्व बैंक ने ऐसी योजनाओं का परिचालन करने या बिटकॉइन अथवा किसी भी क्रिप्टोकरेंसी में लेनदेन के लिए किसी भी इकाई/कंपनी को कोई लाईसेंस/प्राधिकार नहीं दिया है।

भारत में क्रिप्टोकरेंसी पर लगाम लगाने के प्रयास के तहत वित्त मंत्री अरूण जेटली ने भी फरवरी, 2018 के बजट भाषण में अवैध लेनदेन के लिए क्रिप्टोकरेंसी के इस्तेमाल को रोकने की बात कही थी उन्होंने अपने भाषण में यह भी स्पष्ट किया था कि यह लीगल टेंडर नहीं है व सरकार अवैध कार्यों में इस प्रकार के भुगतान को बढ़ावा नहीं देगी।

अप्रैल 2018 में केन्द्रीय बैंक की मौद्रिक नीति समिति की बैठक के बाद 5 अप्रैल, 2018 को विकासात्मक व विनियामक नीतियों पर जारी वक्तव्य के अनुसार आर.बी.आई. ने कहा कि ''तकनीकी नवाचारों में, उन अंतर्निहित वर्चुअल करेंसी सहित, वित्तीय प्रणाली की दक्षता और समावेशकता में सुधार लाने की क्षमता है। तथापि, वर्चुअल करेंसी (वीसी), जिन्हें क्रिप्टोकरेंसी और क्रिप्टो एसेट के रूप में भी जाना जाता है, दूसरों के बीच, उपभोक्ता संरक्षण, बाजार अखंडता और मनी लॉन्ड्रिंग की चिंताओं को बढ़ाता है। रिजर्व बैंक ने बार–बार बिटकॉईन्स सहित, वर्चुअल करेंसी के उपयोगकर्ताओं, धारकों और व्यापारियों को ऐसे वर्चुअल करेंसी के लेनदेन से जुड़े विभिन्न जोखिमों के संबंध में आगाह किया है। संबंधित जोखिमों को ध्यान में रखते हुए, यह निर्णय लिया गया है कि, तत्काल प्रभाव से भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विनियमित संस्थाएं किसी भी व्यक्ति या व्यावसायिक संस्थाओं से कोई सौदा या कोई सेवा प्रदान नहीं करेगा जो वीसी में सौदा या निपटान करते हैं। विनियमित संस्थाएं जो पहले से ही ऐसी सेवाएं प्रदान करती हैं, एक निर्दिष्ट समय के भीतर इस संबंध से बाहर निकलेंगी। इस संबंध में एक परिपत्र अलग से जारी किया जा रहा है।''

इस वक्तव्य के अनुसार तत्काल प्रभाव से आर.बी.आई. द्वारा विनियमित समस्त संस्थाओं के उन सभी व्यक्तियों व संस्थाओं को सेवाएं देने पर रोक लग गई जो कि क्रिप्टोकरेंसी में सौदे या निपटान करते है। इसके साथ ही क्रिप्टोकरेंसी संबंधी व्यवहारों के लिए बैंक खातों व डेबिट/क्रेडिट कार्ड के इस्तेमाल पर रोक लग गई। इसके परिणामस्वरूप भारत में कार्य कर रहे क्रिप्टोकरेंसी एक्सचेंजों को अपने कार्य में बाधा उत्पन्न होने लगी। रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों को क्रिप्टों एक्सचेंजों से लेनदेन बंद करने के आदेश को एक याचिका में चुनौती दी गई और यह मामला सर्वोच्च अदालत में पहुंच गया। यह प्रकरण सर्वोच्च न्यायालय में अभी भी निर्णयाधीन है। इसी बीच 25 सितम्बर, 2018 को भारत के सबसे बड़े व पुराने क्रिप्टोकरेंसी एक्सचेंज 'जैब पे' ने अपना कार्य बंद करने की घोषणा कर दी। हालांकि 'जैब पे वॉलेट' जारी रखा गया। इस सम्बन्ध में भारत में क्रिप्टोकरेंसी का भविष्य सर्वोच्च अदालत के निर्णय पर ही निर्भर करता है।

निष्कर्ष –

क्रिप्टोकरेंसी एक डिजीटल व विकेन्द्रित मुद्रा है। विश्व के समस्त राष्ट्रों की इस बारे में यही सोच है कि इस पर पूर्ण व स्थायी प्रतिबंध लगा पाना संभव नहीं है परन्तु साथ ही विभिन्न राष्ट्रों द्वारा उनके राष्ट्र की मौद्रिक प्रणाली के समानान्तर चलने वाली इस क्रिप्टोकरेंसी की कानूनी रूप से नियंत्रित करने की भी आवश्यकता अनुभव की जा रही है। इसकी आगामी महत्ता को मद्देनजर रखते हुए कुछ राष्ट्र इसे अपने भुगतान तंत्र में सम्मिलित भी कर चुके हैं। इन मुद्राओं का कारोबार करने वाले कारोबारी भी यही चाहते हैं कि इन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के स्थान पर स्पष्ट कानून बनाकर इनका नियमन किया जाए। तेजी से बदलते आर्थिक परिदृश्य, निजी डिजीटल टोकनों के आगमन एवं कागज के नोटों व सिक्कों के मुद्रण एवं प्रबन्धन के भारी व्ययों को देखते हुए विश्व के कई राष्ट्र स्वयं की क्रिप्टोकरेंसी लाने पर भी विचार कर रहे हैं। व्यापक अर्थव्यवस्था के लिए इनका महत्व और बढ़ जाता है। अतः इनके सुरक्षात्मक व कानूनी पक्ष को मजबूत बनाकर इनका विनियमन करते हुए अर्थव्यवस्था के हित के लिए इन्हें प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

Ref :-

1. Dr. Arvind Kumar Singh, Karan Veer Singh(2018), Cryptocurrency in India-Its effect and future on economy with special reference to Bitcoin, Journal of advance management research, volume 6, issue 2, pp 265-274.
2. Krishna Kumar Thakur, Dr. G.G.Banik(2018), Cryptocurrency:its risks and the way ahead, IOSR Journal of Economics and Finance, volume 9, pp 38-42.
3. R. Mohan Kumar(2018), Bitcoins in India: A study of legal and economic aspect, IOSR Journal of Business and Management, volume 20, issue 2, pp75-78.
4. https://rbi.org.in/
5. https://blockgeeks.com/guides/what-is-cryptocurrency/
6. https://en.wikipedia.org/wiki/History_of_bitcoin
7. https://successresources.com/cryptocurrency-history/
8. https://coinpupil.com/altcoins/advantages-disadvantages-of-cryptocurrency/
9. https://timesofindia/business/india-business/bank-warn-customers-on-bitcoin-buys/articleshow/63005161.cms
10. https://hindime.net/cryptocurrency-kya-hai-hindi/
11. https://www.investopedia/tech/most-important-cryptocurrency-otherthan-bitcoin/
12. https://economictimes.indiamates.com/market/stocks/news/crypto-currency-exchange-zebpay-shuts-shop/articleshow/65995638/cms
13. https://www.coindesk.com/price/bitcoin
14. https://m.rbi.org.in/hindi/Scripts/PressReleases.aspx?ID=35237&Mode=0
15. https://www.bhaskar.com/utility/nivesh-bachat/news/crypto-currency-exchange-zebpay-closed-in-india-0741458.html

मोनिका कटारिया
सहायक आचार्य एबीएसटी , डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

LBP PUBLICATION